"हरि अनंत, हरि कथा अनंता।
कहहिं सुनहिं, बहु बिधि सब संता।।"

जगत्पावनी श्रीराम कथा व्यापक लोकमंगलकारी, सारगर्भित एवं उदात्त आदर्शों से समन्वित है । यह कथा शताब्दियों से विभिन्न दार्शनिकों, चिंतकों तथा विद्वानों द्वारा प्रस्तुत की जाती रही है । यह काल से परे एवं सदा ही प्रासंगिक रहने वाली कथा जनमानस को आंदोलित करती रही है तथा आगे भी करती रहेगी। शाश्वत मूल्यबोध, युगबोध और जीवन मूल्यों को संजोये रामकथा अथवा राम साहित्य प्रेरणा और मर्यादा की अजस्र प्रवाहिनी सदृश है जिसमें अवगाहन करने मात्र से चिंतन में विस्तृति आती है।

'विश्व में राम' देश-विदेश के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त राम साहित्य विषयक शोध-आलेखों का संकलित रूप है। विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित रामकथा, रामाश्रित काव्य एवं नाटक, उपन्यास, चित्र आदि बहुविध विषयवस्तु को समेटे यह पुस्तक इस चुनौतीपूर्ण समय में हमें बेहतर जीवन की दिशा दिखा पाएगी, ऐसी उम्मीद करते हैं । यह पुस्तक हिंदी विभाग मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का अमृत-तत्व है, जो सभी सुधिजनों के लिए प्रस्तुत है।

QUIGNOG

LITERATURE ₹499
ISBN 978-81-952913-4-2
9 788195 291342
www.quignog.com
A PIRATES Imprint.

Artwork by
Kailash Raj
Artist, Jaipur

विश्व में राम

डॉ. नीता त्रिवेदी

QUIGNOG

# विश्व में राम

395



संपादक
डॉ नीता त्रिवेदी

# विश्व में राम

396

संपादक
डॉ. नीता त्रिवेदी
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग,
मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

QUIGNOG
भारत

विश्व में राम
Copyright © डॉ. नीता त्रिवेदी 2021

Published by QUIGNOG
A PIRATES Imprint.
www.quignog.com

Typeset in Karma 9.5/15

1/21

Pirates is proud to offer this book to our readers; however, the story, the experiences, and the words belong to the respective authors. The views expressed in the book do not necessarily represent or reflect the views of this publishing house.

All rights reserved.

For worldwide sale.

Pirates is committed to a sustainable future for our business, our readers and our planet. This book is made from Forest Stewardship Council™ certified paper.

# संपादकीय

*" मंगल भवन अमंगल हारी, द्रवहु सुदसरथ अजिर बिहारी।।"*

श्रीराम भारतीय संस्कृति के प्रतीक हैं और भारतवासियों के जीवन हैं ।श्रीराम को परब्रह्म का अवतार माना गया है जो इस जगत में मर्यादाओं की रक्षा के लिए अवतरित हुए। वास्तव में श्रीराम का जीवन ही भारत की संस्कृति है । श्रीराम ईश्वर हैं तो परिपूर्ण , मानव हैं तो भी पूर्ण मानव । श्रीराम के गुण और चरित्र की महानता है कि आज भी रामराज्य की परिकल्पना गांधी के दर्शन का आधार है। रामराज्य सुख- शांति का एक आदर्श प्रतीक है। भारतीय मनीषियों ने भगवान श्रीराम को 'अमूर्त धर्म का मूर्त रूप' कहा है- 'रामो विग्रहवान धर्म:।' भगवान श्रीराम भारतीय संस्कृति में मर्यादा के परम आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित हैं । जगत्पावनी श्रीराम कथा लोक मंगलकारी सुविशाल, व्यापक एवं सारगर्भित है । आदिदेव भगवान विष्णु के अंश से अवतीर्ण, नरतनु धारी मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जीवन लीला से संबंधित यह कथा उत्तर एवं दक्षिण भारत की संस्कृतियों को जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण श्रंखला है। राम अपने विविध रूपों में लोक में व्याप्त हैं-

*'सियाराम मय सब जग जानी, करहु प्रणाम जोरि जुग पानी ।'*

यह समस्त संसार सियाराम मय है। निखिल सृष्टि राममय है। भगवान श्रीराम का नाम संपूर्ण मंत्रों का बीज मूल है। राम नाम वेदों का सार है। राम सबके हैं। सबके अपने-अपने राम हैं । जन-जन के राम हैं, मन-मन के राम हैं । मन के भीतर बसे राम लोक के अपने राम हैं जो कि नितांत वैयक्तिक हैं । लोक उस राम के साथ वन-वन की यात्रा करता है।यह राम के मार्ग को अपने अश्रु जल से पखारता है । पनघट पर स्त्रियां सीता से पूछती भी हैं - 'सांवरे से सखि रावरे कौ हैं ?' सीता भी इशारों से समझाती हैं । यह लोकमानस है जो तुलसी के रामचरित मानस की केवल पूजा ही नहीं करता उसके साथ जीता भी है। यह कोमलांगी जनकदुलारी सीता के दुखों पर रोता है। राम के साथ वन-वन में सीता को खोजता है। गिलहरी के समान राम सेतु बनाने में सहयोग देता है।

other countries of the world with the same respect, love and affection keeping the Ramayana at the center. Unfortunately this topic has not been properly covered in Indian text books and it does not find place in any other print media of day-to-day life as well, thereby keeping the readers ignorant of this topic and piece of information. The literary and poetic virtues of Ramayana have been dealt with in many books by many experts all over the world. There are innumerable references of discussions and criticism of the major and minor characters of the Ramayana as well. Hence, the subject matter is entirely different. The main objective of to present the fact that an Indian epic has taken such deep roots also in countries outside India. With the help of several known and unknown facts, I have tried to explore these countries again. The brilliant display of Indian culture outside India fills me with new energy to keep on going. Today I am truly happy that such a special conference has been arranged by the Mohanlal Sukhadia University, Udaipur focusing on Ramayana. I am very honoured to be able to attend this special event. .

Hopefully this conference will unveil the Indian culture in foreign lands. I remember the remarkable saying by ex-President of Indonesia and the manager of Prambanan temple on the same thoughts. They uttered these words in context of the 'Ramayana' being played on national forums in a major Islamic country. while explaining the reason, "We follow different religious paths but beyond any doubt Ramayana is the unified cultural identity of Asia."

**Mrs Anita Bose.**
Chief Convenor
Global Encyclopedia of the Ramayana.
Author, Artist, Researcher, Guest lecturer of RMIC.
Former guide of National Museum Bangkok.
Alumnus the Siam society Under Royal Patronage.



# अनुक्रमणिका

संपादकीय

Message - Dr. Anita Bose
*Chief Convenor, Global Encyclopedia of the Ramayana*

1. श्री राम: आदर्श का परम विग्रह 1
   प्रो. बी. एल. चौधरी
2. सत्यनिष्ठा एवं श्रीराम 6
   प्रो. नीरज शर्मा
3. वैश्विक परिदृश्य के रामकाव्य परंपरा का प्रवासी महाकवि आदेशकृत परम महाकाव्य 'रघुवंश शिरोमणि श्रीराम' 15
   प्रो. नरेश मिश्र
4. कन्नड़ रामायण 25
   -प्रो. बी. वै. ललिताम्बा
5. तमिल के प्राचीन राम साहित्य और कंब रामायण 32
   -प्रो. एम. ज्ञानम
   -प्रो. ए. मरुद दुरई
6. आंचलिकता और समाज - विज्ञान के निकष पर रामाख्यान 42
   डॉ. विनय कुमार पाठक
7. रूस में रामलीला का इतिहास और परंपरा 48
   डॉ. रामेश्वर सिंह
8. पूर्वोत्तर भारत में वैष्णव मत का उद्भव एवं विकास 52
   प्रो. दिनेश कुमार चौबे
9. नेपाल की राम-कथा परम्परा और भानुभक्त कृत रामायण 62
   डॉ. श्वेता दीप्ति

10. गुजराती साहित्य में रमणलाल सोनी कृत 'श्री रामकथा सुधा' का स्थान 71
डॉ. जशवतभाई डी. पंड्या

11. वैश्विक परिदृश्य में रामकथा- विविध रंग 79
सुनील पाठक

12. वर्तमान युग में रामकथा की प्रासंगिकता 86
डॉ श्वेता उपाध्याय

13. भुशुण्डि रामायण का वैशिष्ट्य 97
डॉ. राजेश श्रीवास्तव

14. तुलसी काव्य में समन्वय 107
डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह,

15. आधुनिक कविता और रामायण के विविध सदंर्भ 121
डॉ. नीतू परिहार

16. रामायण: एक नहीं अनेक (रामानन्द सम्प्रदाय के परिप्रेक्ष्य में) 132
महेश शर्मा (शास्त्री कोसलेन्द्रदास)

17. राम साहित्य में राम की वियोग-अभिव्यंजना 140
डॉ. प्रीति भट्ट

18. आधुनिक काव्य में रामकथा का बदलता स्वरूप 147
डॉ. कुलवंत सिंह

19. रामकथा और राधेश्याम रामायण 159
डॉ. नवीन नंदवाना

20. पंजाब में रचित राम काव्य की अज्ञात एवं अल्पज्ञात पांडुलिपियां (भाई गुरदास पुस्तकालय का संदर्भ) 179
डॉ. सुनीता शर्मा

21. रामकथा के कितने नाम 190
डॉ. आशीष सिसोदिया



22. आधुनिक मानव नियति के संदर्भ में राम 194
डॉ. मंजु त्रिपाठी

23. रघुवंशमहाकाव्य में 'राम' 199
डॉ. विजय कुमार चतुर्वेदी

24. रामलीला और अंकिया नाट (राम कथा के दो नाट्य रूपों पर एक तुलनात्मक दृष्टि) 204
डॉ. संगीता माहेश्वरी

25. स्त्री स्वाभिमान की प्रथम दीपशिखा - वैदेही 213
डॉ. नवनीतप्रिया शर्मा

26. तुलसी का मानस और वैश्विक परिदृश्य 222
डॉ. संजू श्रीमाली

27. आधुनिक संदर्भों में राम कथा की प्रासंगिकता 232
डॉ. मधुबाला सांखला

28. आधुनिक युग में रामकथा का बदलता स्वरूप "सीता-मिथिला की योद्धा" उपन्यास के विशेष सन्दर्भ में 238
डॉ. मनीषा शर्मा

29. उत्तररामचरितम् में राम का द्विविध चरित्र 245
डॉ. शान्ति लाल सालवी

30. राजस्थानी साहित्य परम्परा एवं श्रीराम 252
डॉ.सुरेश सालवी

31. सीता: एक निर्वचनात्मक विश्लेषण 264
डॉ. सुमित्रा शर्मा

32. मानव जीवन के आदर्श: राम 278
डॉ. ज्योति गुप्ता

33. राम का आदर्श और उसका विस्तार 287
डॉ. स्मिता शर्मा

12. रामविलास शर्म (सं.) राग-विराग, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1979, पृ. - 93
13. रामविलास शर्म (सं.) राग-विराग, पृ. - 94
14. रामविलास शर्म (सं.) राग-विराग, पृ. - 100
15. नरेश मेहता - संशय की एक रात, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012, पृ. - 40
16. नरेश मेहता - संशय की एक रात पृ. - 39



# रामकथा और राधेश्याम रामायण

- डॉ. नवीन नंदवाना
सह आचार्य, हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
(राजस्थान) 313001

निवास:
ए-जी-9, रामेश्वरम् अपार्टमेंट, हनुमान नगर,
मनवाखेड़ा, उदयपुर (राजस्थान) 313003
संपर्क: 09828351618, 09462751618
nandwana.nk@gmail.com

भारतीय लोकजीवन में भक्ति की एक विशाल एवं समृद्ध परंपरा मिलती है। राम और कृष्ण यहाँ के प्रमुख आराध्य रहे हैं। इन दोनों देवताओं को आराध्य मानकर भाषाओं से विविध भारतीय भाषाओं में भावाभिव्यक्ति होती रही है। रामकथा आधारित साहित्य रचना पर दृष्टि डालें तो पाते हैं कि इस दिशा का प्राचीन ग्रंथ वाल्मीकि कृत रामायण है। इसके अलावा संस्कृत में योगवासिष्ठ या 'वशिष्ठ रामायण' (वाल्मीकि), अध्यात्म रामायण (वेदव्यास), आनन्द रामायण (वाल्मीकि), अगस्त्य रामायण (वाल्मीकि), अद्भुत रामायण (वाल्मीकि) और रघुवंश (कालिदास) आदि की भी रचना हुई। बौद्ध परम्परा में अनामर्क जातक, दशरथ जातक, दशरथ कथानक नाम से रामकथाएँ रची गईं। अपभ्रंश भाषा में स्वयंभू ने 'पउमचरिउ' की रचना की।

विभिन्न आधुनिक भारतीय भाषाओं की बात की जाए तो उनमें भी रामकथा रचना की समृद्ध परंपरा मिलती है। गुजराती भाषा में रावण मंदोदरी संवाद (श्रीधर), रामायणपुराण (स्वयंभूदेव), राम बालचरित (भालण), रामायण (कहान), रामायण (विष्णुदास), सीतानो सोहलो (तुलसी), सीतास्वयंवर (हरिराम), रामकथा (राजाराम), रामचरित्र (रणछोड़) और रामायण (प्रेमानंद) शीर्षक से रामकथाएँ लिखी गईं। यदि अन्य भारतीय भाषाओं की बात